ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(4): 130-131
www.allresearchjournal.com
Received: 20-02-2023
Accepted: 23-03-2023

राम कुंवर
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
राम कुंवर
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

भारतेंदु युगीन रंगमंच का लोक जागरण में योगदान

राम कुंवर

प्रस्तावना

हिंदी नाट्य साहित्य को वास्तविक प्रेरणा संस्कृत नाट्य साहित्य से प्राप्त हुई है। अनुदित तथा मौलिक नाटकों में प्राय: संस्कृत नाट्य प्रणाली का ही प्रयोग हुआ है। प्रारंभिक रचनाओ में देखा जाए तो हनुम्मनाटक तथा समयसार नाटक इसी कोटि की रचनाएँ हैं। रचनाक्रम के अनुसार कृष्ण मिश्र कृत प्रबोध चंद्रोदय हिंदी साहित्य का सर्वप्रथम नाटक है।

भारतेंदु युग हिंदी नाट्य साहित्य का प्रथम चरण माना जाता है। इस युग में व्यापक पैमाने पर ना सिर्फ नाट्य लेखन हुआ है बल्कि उनके मंचन के लिए भी प्रेरणा मिली है। भारतेंदु जी ने सभी विधाओं में सबसे सशक्त माध्यम नाटक को मना है और वह जानते थे कि नवजागरण और प्रगतिशील चेतना को नाटक के माध्यम से ही उद्भाषित किया जा सकता है। समाज को जगाने में नाटक सबसे प्रबल साधन सिद्ध होता है क्योंकि यह दृश्य और श्रव्य माध्यम है, जो लोगों के मन पर व्यापक असर छोड़ता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते है- "नवीन धारा के बीच भारतेंदु की वाणी का सबसे ऊचा स्वर देश भक्ति का है, भारतेंदु का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर ही बड़ा गहरा पड़ा है। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वस्छ रुप दिया उसी प्रकार हिंदी साहित्य को भी नये मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया। 5 नवंबर 1884 को बलिया में भारतेंदु जी के नाटक सत्य हरिश्चंद्र की प्रस्तुति कराई गई जिसमें स्वयं भारतेंदु जी ने हरिश्चंद्र का अभिनय किया था। सत्य हरिश्चंद्र नाटक में हरिश्चंद्र की प्रतिज्ञा थी-

"चंद्र टरै सूरज टरै टरै जगत व्यौहार
पे दृढ़ श्री हरिश्चन्द्र को टरै न सत्य विचार"

सत्य की चर्चा जब भी होगी महाराजा हरिश्चंद्र का नाम जरूर लिया जाएगा सपने में भी वचन देकर उसका उन्होंने निर्वहन किया सत्य की रक्षा के लिए उन्होंने हर तरह की परेशानियों को झेला।

भारतेंदु युगीन रंगमंच का समय देश की गुलामी का समय रहा है। इसमें अंग्रेजों से सन् 1857 की क्रांति वास्तव में हिंदू और मुस्लमान नरेशो और भारतीय जनता की ओर से देश को विदेशियों की राजनीतिक आधिनता से मुक्त कराने का महान और व्यापक प्रयत्न था। 'लंदन टाइम्स' के भारत स्थित संवाददाता ने भारतीय उत्तेजना पूर्ण वातावरण का अपनी दैनंदिनी में उल्लेख किया है। महासंग्राम के बाद अंग्रेजो ने भारतीय आधुनिकता की जगह औपनिवेशिक आधुनिकता का विकास किया। भारत अंग्रेजों के लिए सदैव एक उपनिवेश स्थल ही रहा है। यूं तो उन्होंने शिक्षा तकनीक विज्ञान आदि माध्यमों में विकास कार्य किया लेकिन वह पूरी तरह भारतीय चिंतन परंपरा और भारतीयता से कटी हुई थी। जो लोगों को मानसिक रूप से गुलाम बनाने का कार्य कर रही थी। उनके द्वारा यहां पर शासन करने के उद्देश्य राजनीतिक कम आर्थिक और धार्मिक ज्यादा थे। वह भारत के बाजारों, कामगारों और कृषकों की पारंपरिक व्यवस्था को नष्ट कर अपनी पूंजीवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, तो वहीं दूसरी ओर ईसाई मिशनरियों द्वारा यहां धर्मांतरण करना चाहते थे। सम-सामयिक वातावरण का प्रभाव साहित्यकार की भावनाओ में यत्र तत्र दृष्टिगत होता है। युग साहित्य का निर्माण करता है और साहित्य युग का। साहित्य प्राय: जनरुचि की अवहेलना नही कर सकता यह नितांत सत्य तथ्य है। राष्ट्रिय चेतना में सहयोग देने वाले साहित्य की आवश्यकता थी, जो सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलनों की प्रेरणा को चिरस्थायी बनाए रखने में सहायक थी। देश के यथार्थवादी चित्रण का साहित्यिक दिग्दर्शन कराने वाले युग पुरुष साहित्यकार भारतेंदु जी ही थे। ये साहित्य को युग चेतना का माध्यम बनाकर जन जागरण की अलख जगाने लगे। उनकी भावधारा ने अन्य सम-सामयिक साहित्यकारो का पथ प्रदर्शन किया। ऐसे ही एक प्रमुख नाटककार थे, पं.देवकीनंदन त्रिपाठी जिन्होंने "भारती हरण" नाटक की भूमिका में लिखा है - "इस समय विज्ञान दुखी भारतवासियों को ऐसे नाटक दिखलाने की आवश्यकता है जिससे इनको अपनी भलाई बुराई का भी ज्ञान हो और जो जो दुख इस समय इनका प्राप्त है उनको दूर करने को मन चित्त उमड़े"। तत्कालीन नाटक मंडलियों द्वारा सामाजिक सरोकार, स्त्री शिक्षा

और आत्मबोध जैसे विषयों को नाटक के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिसमें प्रयाग की 'आर्य नाटक सभा' द्वारा पं.देवकीनंदन त्रिपाठी का 'कलयुगी जनेऊ', 'भारतीय हरण', लाला श्रीनिवास दास का 'रणधीर प्रेममोहिनी', लाल शालिग्राम का 'काम कंदला' एवं श्रीरामलीला नाटक मंडली द्वारा 'सीय स्वयंवर' नाटक खेला गया। जिनके माध्यम से लोगों के भीतर सत्यता, मित्रता, आपसी भाई-चारा, त्याग और बलिदान जैसे राष्ट्रीय मुल्यो को प्रतिष्ठित किया गया। वीरेंद्र कुमार शुक्ल ने अपनी किताब 'भारतेंदु का नाट्य साहित्य' में लिखा है- "साहित्य और समाज के आसमान और धरती का मिलन भारतेंदु युग रूपी छितिज पर होना दृष्टिगत होता है"।

भारतेंदु जी ने अपने 'नाटक' (1883) निबंध में कहा हैं- "यदि श्रव्य काव्य द्वारा ऐसी चितवन का वर्णन किसी से सुनिए या ग्रंथ से पढ़िए तो काव्य जनित आनंद होगा। यदि कोई दृश्य काव्य प्रत्यक्ष अनुभव करा दे तो उससे चतुर्गुणित आनंद होता है, दृश्य काव्य की संज्ञा रूपक है"। रंगमंच के द्वारा दृश्यात्मक रूप में प्रेक्षक को उसकी प्राचीन सांस्कृतिक व राष्ट्रीय अस्मिता से परिचित कराते हुए उसमें राष्ट्र गौरव की भावना का संचार किया जाता है। नाटक अपनी विद्या में लोकतांत्रिक स्वरूप लिए हुए हैं नाटक व्यक्ति विधा नहीं है, नाटक एक सामाजिक विधा है। कोई भी रंग प्रदर्शन किसी एक व्यक्ति के द्वारा पूर्ण नहीं किया जा सकता है, उसमें एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। नाटक की चरम सार्थकता उसके दृश्य विधा होने में है। इसलिए यह लोगों को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। भारतेंदु के 'नील देवी', श्रीनिवास दास के 'संयोगिता स्वयंवर', राधा चरण गोस्वामी के 'अमर सिंह राठौर' राधा कृष्ण दास के 'महाराणा प्रताप' आदि नाटकों में लोक-जागरण का आभास स्पष्ट दिखलाई देता है।

भारतेंदु जी नाट्य लेखन एवं अभिनय के केंद्र में एक संस्था की तरह कार्यशील रहे। रंगमंच अंग्रेजों के लिए मनोरंजन का साधन था, जिसे कुछ परसी व्यापारियों ने व्यवसाय के रूप में विकसित किया। इस रंगमंच का उद्देश्य लोगों को अश्लील दृश्य दिखाना, लोगों में फुहड़ता को बढ़ावा देना एवं अधिक से अधिक धनोपार्जन करना था। इन पारसी कंपनियों में ओल्ड पारसी थिएट्रिकल कंपनी, लहौर एलेकजेन्डरिया, जुबली कंपनी, इम्पीरियल कंपनी आदि। ऐतिहासिक रूप से इन कंपनियों का महत्व अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा, किंतु यह समाज तथा साहित्य की उपयोगी देन न सिद्ध हो पाई। ये नाटक मंडलिया न तो समाज के नैतिक स्तर को ऊचा कर सकी न कोई सुधारवादी योजना समाज के सम्मुख उपस्थित कर सकी। बालकृष्ण भट्ट जी अपने लेख 'पारसी थिएटर' (1903) में लिखते है- "हिंदू जाति तथा हिंदुस्तान को जल्द गिरा देने का सुगम लटका पारसी थिएटर है, जो दर्शको को आशिकि माशुकि का लुफ्त हासिल कराने का बड़ा उम्दा जरिया है। क्या मजाल जो तमाशबिनो को कही से किसी बात में पुरानी हिंदुस्तानी की झलक मन में आने पावे। सच कहते तो यह तीन बड़े फायदे नाटकों के अभिनय के है- पहला धर्म संबंधी या राजकीय संबंधी उत्तम उपदेशो का मिलना, दूसरा देश की पुरानी रीति नीति को किसी पुराने इतिहास या घटनाओ का अभिनय कर दिखाना अथवा प्रचलित कुरीतियों की बुराई को दिखाना। तीसरा भाषा का प्रचार"। देखा जाए तो भट्ट जी ने जो नाटकों के अभिनय के फायदे बताए इसी को लेकर भारतेंदु युग का रंगमंच आगे बढ़ता दिखलाई देता है। जिसके कारण अव्यावसायिक रंगमंच का आरंभ हुआ, इसका आरंभ भारतेंदु युग के कई नाटककारों ने किया जिनमें- भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं.बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, रामनारायण त्रिपाठी, माधव शुक्ल, आदि नाटककार शामिल रहे। जिनका उद्देश्य भारतीय जनमानस के अंदर स्व के भाव एवं राष्ट्र प्रेम को जागृत करना था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं- "प्राचीन और नवीन का ही सुंदर सामंजस्य भारतेंदु की कला का विशेष माधुर्य है। साहित्य के एक नवीन युग के आदि परिवर्तन के रूप में खड़े होकर उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया कि नए या बाहरी भावों को पचाकर इस प्रकार मिलना चाहिए कि अपने ही साहित्य का विकसित अंग लगे। प्राचीन और नवीन के उस संधिकाल में जैसी शीतल कला का संचार अपेक्षित था वैसी ही शीतल कला के साथ भारतेंदु का उदय हुआ, इसमें संदेह नहीं"। भारतेंदु जी ने ही हिंदी रंगमंच के विकास में परंपरा और आधुनिकता का समन्वय करते हुए, संस्कृत नाट्य परंपरा के महत्वपूर्ण तत्वों को लोकनाट्य परंपरा के साथ समन्वित किया और हिंदी रंगमंच को विकसित किया। भारतेंदु युगीन नाटक मंडलियों में 'श्रीरामलीला नाटक मंडली', 'नगरी नाटक मंडली', 'भारतेंदु नाटक मंडली', 'आर्य नाट्य सभा', 'रेलवे थिएटर', 'नागरी प्रवर्धिनी सभा', 'हिंदी नाट्य परिषद' आदि शामिल है। इन मंडलियों ने अपनी मंचिया प्रस्तुति से भारतीय रंग परंपरा के सांस्कृतिक तत्वों को उद्भाषित करने और समसामयिक जीवन से उसे जोड़ने का कार्य किया। इस तरह भारतेंदु युगीन रंगमंच राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण की प्रक्रिया का प्रबल और सशक्त माध्यम बना। विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा एवं अभिनय आने से हिंदी रंगमंच आत्महीनता से मुक्त होने के साथ-साथ ही अपने समय के ज्वलंत सामाजिक-सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रश्नों से जुड़ा तथा पारसी रंगमंच के समानांतर अव्यावसायिक रंगमंच के शुरुआत ने नवजागरण की प्रक्रिया में अपना सक्रिय योगदान देते हुए जनरुचि के संस्कार परिष्कार का कार्य आरंभ कर दिया।

भारतेंदु युगीन नाटककारो के साहित्यिक योगदान के कारण एक नया युग रंगमंच का आरंभ हुआ जिसने हिंदी रंगमंच को मजबूत करने के साथ साथ उसे आधुनिकता से भी जोड़ा। उनके नाटक और नाट्य कृतियों मे भारतीय समाज की समस्याओ जैसे कि सामाजिक अन्याय, जातिवाद, शिक्षा और महिला शशक्तिकरण पर जोर दिया गया तथा विभिन्न वर्गो के बीच जगरुकता और समझौते को बढ़ावा देने का भी कार्य किया गया। भारतेंदु युगीन रंगमंच के कार्यो ने लोक जागरण मे एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आंदोलन का संज्ञान किया।

संदर्भ

1. भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्य शालाए (डॉ विश्वनाथ शर्मा), कलम घर प्रकाशन, जोधपुर।
2. हिंदी रंगमंच का इतिहास (डॉ चंदुलाल दुबे), जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।
3. हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास (डॉ सोमनाथ गुप्त), हिंदी भवन, जालंधर।
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाट्य साहित्य (डॉ वीरेंद्र कुमार शुक्ल)।
5. भारतेंदु ग्रंथावली (शिवप्रसाद मिश्र)।